सामाजिकता विद्रूपता के कवि निराला

डॉ० आलोक मिश्र
(हिन्दी विभाग)
प्रभारी, कला संकाय
एस०एस०(पीजी०) कॉलेज
शाजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
भारत, 242226

मनवीय समाज का निर्माण मूल्यों की नींव पर होता है। जब मूल्य बिखण्डित होते हैं तब समाज में विद्रूपताएं जन्म लेती हैं। इन विद्रूपताओं से आतंकित समाज में कवि सुधार की साहित्य साधना प्रारम्भ करता है। इसी तरह के साधक महाप्राण निराला हैं जिन्होंने विद्रूपता देखी ही नहीं वरन् जीवन भर झेली भी है।

निराला का महिषादल प्रकृति के सुरम्य वातावरण का सजग प्रहरी था। जिस महिषादल की गोद में समाज का ककहरा सीखा था वहाँ निराला जी कोयलों की कूक पर अपनी भी कूक भर दिया करते थे। कुएं में झाँककर दहाड़ना उनके बचपन के मान को और बढ़ा देता था। कुल मिलाकर निराला ने जीवन को प्रकृति के साथ–साथ जिया और भोगा था। जिसका चित्रण उन्होंने 'कुकुरमुत्ता' के दूसरे खण्ड के आरम्भ में इस प्रकार किया है।

''बाग के बाहर पड़े थे झोंपड़े,
दूर से जो दिख रहे थे अदगड़े,
जगह गन्दी, रूका सड़ता हुआ पानी,
मोरियों में जिन्दगी की लन्तरानी,
बिलबिलाते कीड़े, बिखरी हड्डियाँ
सेलरों की परों की थी गड्डियाँ
कहीं मुर्गी, कहीं अण्डे,
धूप खाते हुए कण्डे।
हवा बदबू से मिली
हर तरह की बासीली पड़ गयी।''[1]

चतुरी चमार, में निराला ने अपने पुश्तैनी गांव गढ़ाकोला का जो नक्शा खींचा है, वह इससे भिन्न नहीं है। ''चतुरी चमार, डाकखाना चमियाना, मौजा–गढ़ाकोला, जिला उन्नाव... मेरे ही नहीं मेरे पिताजी

की, बल्कि उनके भी पूर्वजों के मकान के नीचे और ऊपरवालों पनालों का बरसात और दिनरात का शुद्धाशुद्ध जल बहता रहता है..''[2]

अफसरशाही बरकरार रही। भारतीय जनता का मोहभंग होने लगा। ऐसी समाजिक पृष्ठभूमि ने निराला जैसे व्यंग्यकार की मानसिक संरचना कर दी। इस बात को इस तरह भी देखा जा सकता है कि ''निराला की पहली रचना 'अनामिका' है जिसका प्रकाशन 1923 में हुआ था। तब से अपने महाप्राण तक निराला समाज के दृष्टा रहे थे। उन्होंने देखा था कि राजनीति भारतीय समाज की मूल ऊर्जा है। उन्होंने राजनीति और समाज के सम्बन्ध में चर्चा करते हुये कहा है कि समाज और राजनीति का घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज की तैयारीराजनीति तैयार करने को अत्युक्ति नहीं होगी।''[3] निराला राजनीतिक दिलचस्पी का साक्ष्य देते हुये डॉ0 रामविलास शर्मा सन् 20 मे बंगला पात्रों में सुर्जकुमार रूसी क्रान्ति के और वहाँ के नये समाज के रचना का हाल पढ़ते और दोनों (सुर्जकुमार और महादेव प्रसाद) का झुकाव उग्र राजनीति की ओर था। उन्हें लगता था कि अंग्रेजों को निकालना ही काफी नहीं है, बल्कि समाज के ढांचे को भी बदलना जरूरी है।

निराला की कविता और उनके साहित्येतर चिंतन के मेल को रेखाँकित करते डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है कि ''सन् 1920 में गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन किया हिन्दू और मुसलमानों के मैत्री के अभूतपूर्व दृश्य देखे गये और दूर–दूर देहात तक चरखे का प्रसार होने लगा। सुर्ज कुमार महिषादल के आसपास के गाँव में जाके, उन्हें स्वदेशी की महत्ता समझाते है। हर जगह राष्ट्रीय गीतों की धूम थी। सूर्ज कुमार बड़े प्रेम से ये गीत पढ़ते और गाते।''[4]

सन् 1920 के आसपास द्विजेन्द्र लाल राय के राष्ट्रगीतों से प्रभावित होकर निराला जी ने 'जन्म भूमि' जैसे सुन्दर राष्ट्र गीत लिखे। स्वाधीनता संग्राम में निराला जी के ऐसे प्रत्यक्ष संलग्नता केवल महिषादल तक ही सीमित नहीं थी। यद्यपि वे अपने पैतृक गाँव गढ़ाकोला आते इसी भावावेश के साथ वे अंग्रेजी राज्य के चलते हो रही हुकूमत के खिलाफ उत्तेजित करने का प्रयत्न करते रहते थे। इस सन्दर्भ में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने लिखा है कि ''तीन चार वर्ष पश्चात (1929–30 ई0) जब गांधी जी का सत्याग्रह आन्दोलन गांव में भी जोर पकड़ चुका था, मुझे उनके राजनीतिक स्वरूप का भी परिचय मिला। हमारे गाँव में भी राजनीतिक सभायें हुआ करती थी। उनमें सक्रिय कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के साथ निराला जी और मैं प्रायः उपस्थित रहते थे। इस अवसर पर उनके भाषण जोरदार हुआ करते थे। उनका मुख्य विषय अंग्रेजी राज्य में ग्रामीणों की दुर्दशा रहा करता था और यहाँ वे आर्थिक पक्ष पर अधिक बल दिया करते थे।''[5]

निराला की मानसिक संरचना रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द द्वारा संस्थापित रामकृष्ण मिशन का महत्वपूर्ण स्थान है। इस संदर्भ में आचार्य शिवपूजन सहाय ने लिखा है कि ''परमहंस श्री

रामकृष्ण देव की बेलूड़ मठ मेंप्रतिवर्ष परमहंस जी और स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा जयन्तियों तथा पूर्ण स्मृतियों पर वहाँ दरिद्र नारायण को विधिवत भोजन कराया जाता था। मिशन की शाखा विवेकानन्द सोसाइटी के विद्वान संन्यासियों के साथ समन्वय, सम्पादक निराला जी भी जाया करते थे। उस विराट आयोजन के कार्यक्रमों में निराला केवल दरिद्रनारायण को भोजन वितरित करने का ही काम अपने जिम्मे लेते थे। कंगालों को खिलाने में उनकी गहरी लगन देख लोग मुग्ध हो जाते थे।''[6]

निराला के पूर्व तथा उनके समकालीन चलने वाले समस्त सुधारवादी कार्यक्रमों के जिन मुद्दों ने उन्हें विशेष आकृष्ट किया वे निम्नलिखित है –

देशकाल बोध,
राष्ट्रीय गौरव बोध,
नवीन राष्ट्रीय गौरव बोध,
नारी मुक्ति,
हरिजन उद्धार,
सामाजिक समता,
मानवतावादी दृष्टि,
वर्णाश्रम धर्म : पक्ष विपक्ष और
धार्मिक समन्वय।

निराला के पूर्व तथा उनके समकालीन समाजसुधारकों ने देशवासियो का ध्यान अंग्रेज शासकों के कुशासन की ओर खींचा था। अंग्रेजों का कुशासन ही भारतवासियों की दुर्दशा का कारण था। निराला की कविताओं में भी उनके इस देश–बोध की अभिव्यक्ति हुई है–

''शत–शत वर्षों का सब
हुआ पार देश का, न
हुए प्राण सार्थक।
बढ़ा भेद सुख–देह
तम रे जागरे भेदन।''[7]

सरोज स्मृति में भी निराला एक चित्रण करूण प्रसंग के माध्यम से परम्परा वाहक अपने समाज का किया है–

सास ने कहा लख एक दिवस,

'भैया, अब नहीं हमारा बस,
पालना–पोसना रहा काम
देना 'सरोज' को धन्य धाम
शुति वर के कर, कुलीन लखकर
है काम तुम्हारा धर्मोत्तर!

निराला पर रामकृष्ण परामहंस और रामकृष्ण मिशन के कार्यक्रमों का गहरा प्रभाव पड़ा था। 'सेवा –प्रारम्भ' शीर्षक उनकी कविता में रामकृष्ण परमहंस के शिष्य अखण्डानन्द द्वारा आरम्भ की नयी समाज –सेवा के कार्यक्रमों की अभिव्यक्ति है।

निराला के पूर्व जो समाज सुधारवादी आन्दोलन खड़े किये गये थे, उन सबमें एक सामान्य विशेषता यह थी कि इन आन्दोलनों के संचालक सब के सब नेताओं ने जनसामान्य में अपने अतीत के इस गौरव बोध से जनसामान्य में वर्तमान की अधोगति देखकर क्षोभ उत्पन्न हुआ और अपनी अधोगति के मुख्य कारण अंग्रेजों के शासन की शोषक चालों को वे आसानी से समझ सके। इसदृष्टि से निराला ने भी अपने लक्षाधिक पाठकों में अतीत के प्रति गौरव जगाने का काम अपनी जिन कविताओं के द्वारा किया है उनमें 'यमुना के प्रति', 'खण्डहर के प्रति', 'यति' और 'जागरण' उल्लेख्य हैं।

किन्तु निराला का भी राष्ट्रगौरव–बोध अपूर्ण नहीं, पूर्ण है। वे राजाराम मोहनराय और स्वामी विवेकानन्द के नवीन राष्ट्रीय गौरव बोध को भी अभिव्यक्ति करते हैं–

''मिला ज्ञान से जो धन
नहीं, हुआ निश्चेतन
बांधो उससे जीवन
साधो पग–पग यह डग।''[8]

इस दृष्टि से उनकी 'जन्म भूमि' 'जागो फिर एक बार' आदि कवितायें दृष्टव्य हैं। वे भारतीयों में छिपी गुप्त ऊर्जा का ज्ञान उन्हें दार्शनिक प्रणाली पर कराते हैं।

'ब्रह्म हो तुम पद रज भर ही है नहीं पूरा यह विश्वभार' और स्वदेशवासियों को धोखेबाज विदेशी शासकों के विरूद्ध खड़ा होने के लिए ललकारते हैं –

शेरों की माँद में
आया है आज स्यार,

उन्होंने देशवासियों को अंग्रेजों की चाटुकारिता करने से वर्जित किया है।

चूम चरण मत चोरों के तू
गले लिपट मत गोरों के तू
अगर उतरना पार चाहता
दिखा शक्ति बलवान।

इन पंक्तियों में उन पर स्वामी विवेकानन्द के जीवन दर्शन का प्रभाव स्पष्ट है। उन्होंने उनमें साम्प्रदायिक संकीर्णता नहीं आने दी है। अतः उनकाराष्ट्रीयता बोध आर्य समाजियों के राष्ट्रीयता–बोध की संकीर्णता से सर्वथा मुक्त और उदार है।

ज्यों–ज्यों स्वतंत्रता संघर्ष अपने अन्तिम छोर की ओर अग्रसर होता जा रहा था, निराला मुक्ति के प्रति आश्वस्त होते जा रहे थे –

जगा दिशा–ज्ञान,
उगा रवि सूर्य का गगन में तथा
हारे हुए सकल दैन्य दलमल चले
जीत हुये लगे जीते हुए गले
बन्द वह विश्व में गूँजा विजय–गान।

'प्रबन्ध प्रतिमा' में उन्होंने यह स्पष्टतः लिखा है कि ''समाज के व्यक्तित्व को कायम रखने के लिए पहले जो स्मृतियाँ, जो कानून प्रचलित थे, आज के लिए वे अनुकूल नहीं रहे।''[9] स्वामी विवेकानन्द ने भारत के उच्च वर्णवालों को चेतावनी देते हुए लिखा– ''ए भारत के उच्च वर्णवालों, तुम्हे देखता हूं तो जान पड़ता है, चित्रशाला में तस्वीरें देख रहा हूँ। तुम लोग छायामूर्तियों की तरह विलीन हो जाओ। अपने उत्तराधिकारियों (शूद्रों) को अपनी तमाम विभूतियाँ दे दो, नया भारत जाग पड़े।''[10] और इसी के स्वर में स्वर मिलाकर निराला ने भी लिखा है, वृद्ध भारत की वृद्ध जातियों की जगह धीरे–धीरे नवीन भारत, नवीन जातियों का शुभागमन हो, इसके लिए प्रकृति ने वायुमण्डल तैयार कर दिया है। ''प्राचीन ब्राह्मण और क्षत्रिय जातियाँ उनके आने में सहायक न होंगी तो जातीय समर में अवश्य ही उन्हें नीचा देखना होगा। क्रमशः यही अत्यन्त शूद्र यज्ञकुण्ड से निकल अधम क्षत्रीय की तरह अपनी चिरकाल कीप्रसुप्त प्रतिभा की नवीन स्फूर्ति से देश में अलौकिक जीवन का संचार करेंगे। इन्हीं की अजेय शक्ति भारत को स्वतंत्र करेगी।''[11]

जहाँ तक धर्म निवेश में आस्था की बात है, निराला मिशन से प्रेरित समन्वयवादी थे। इसकी अभिव्यक्ति उनकी बहुदेवोपासना में हुई है।

निराला के पूर्व की जिस सामाजिक पृष्ठभूमि में सुधारवादी आन्दोलनों एवं गांधीजी के अछूत कार्यक्रमों में अस्पृश्यता–निवारण के व्यापक कार्यक्रम चलाये गये थे। निराला के साहित्य में भी इस कार्यक्रम का प्रभावशाली संस्पर्श दिखायी पड़ता है। 'चतुरी चमार' शीर्षक कहानी में उन्होंने अपने समकालीन भारत की सामाजिक व्यवस्था में इस काम की कठिनाई की ओर संकेत किया है। चमार दबेंगे, ब्राह्मण दबाएंगे। दवा है, दोनों की जड़ें मार दी जायें। पर यह सहज नहीं। किन्तु व्यक्तिगत तौर पर निराला ने यह काम कर दिखाया। निराला ने लिखा है, ''उन दिनों बाहर मुझे कोई काम न था, देहात में रहना पड़ा। गोश्त खाने लगा। समय–समय पर लोध, पासी, धोबी और चमारों का ब्रह्मभोज भी चलता रहा। घृतपक्त मसालेदार मांस की खुशबू से जिसकी भी लार टपकी, आप निमंत्रित होने को पूछा। इस तरह मेरा मकान साधारण जनों का अड्डा हो गया।''[12] कुल्लीभाट का हवाला देते हुए डॉ0 रामविलास शर्मा ने भी लिखा है, ''डलमऊ में जब 'चमार, पासी, धोबी और कोरी दोनों में फूल लिये हुए 'निराला के सामने रखने लगे, डर के मारे हाथ पर नहीं दे रहे थे कि कहीं छू जाने पर मुझे नहाना होगा, तब निराला का मन ग्लानि से भर गया और वह स्वयं से पूछने लगे–तुम कितने बड़े क्रान्तिकारी हो, इनके लिए तुमने क्या किया है ?''[13]

निराला ने उन चमार, पासी, धोबी और कोरी लड़कों से कहा, ''आप लोग अपना दोना मेरे हाथ में दीजिए, और मुझे उसी तरह भेंटिये, जैसे मेरे भाई भेंटते हैं।''[14]

सुधारवादी आन्दोलनों और स्वतंत्रता संघर्ष की एक सामान्य विशेषता यह भी थी कि उनमें सामाजिक समता के लिए एक आग्रह था। स्वामीविवेकानन्द ने सामाजिक समता पर आधारित इस समाजवाद के सम्बन्ध में लिखा था, ''मै समाजवादी हूँ लेकिन इसलिए नहीं कि मैं उसे एक पूर्ण दोषहीन व्यवस्था समझता हूँ बल्कि इसलिए कि पूरी रोटी न मिलने से आधी रोटी मिलना ही बेहतर है।''[15] 'गीतिका' में यह काम निराला ने प्रार्थना के बल पर देवी से करवाना चाहा–

तोल तू उच्च–नीच समतोल/तंत्री के से गान।

अथवा 'एक ही आशा में सब प्राण'–में इस बात की अभिव्यक्ति मिलती हैं। इसके लिए निराला पुरानी सामाजिक व्यवस्था के ध्वंस तक की कामना करते हैं।

जला दे जीर्ण–शीर्ण प्राचीन/क्या करूँगा तन जीवन–हीन?

क्योंकि वे जानते हैं कि बिना वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की सड़ांध को दूर किये नवीन स्वस्थ समाज की नींव नहीं रखी जा सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. निराला : कुकुरमुत्ता, पृ0 : 49–50
2. निराला : चतुरी चमार, पृ0 : 9
3. सुधा : अगस्त, 1933
4. रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना, खण्ड–1, पृ0 : 58
5. नन्द दुलारे वाजपेयी : कवि निराला, पृ0 : 2
6. आचार्य शिवपूजन सहाय : वे दिन वे लोग, पृ0 : 83
7. गीतिका : पृ0 : 81
8. गीतिका : पृ0 : 81
9. गीतिका : पृ0 : 84
10. गीतिका : पृ0 : 174
11. निराला : चाबुक : पृ0 : 89–90
12. निराला : चतुरी चमार : पृ0 : 13
13. रामविलास शर्मा : निराला की साहित्य साधना, खण्ड–2, पृ0 : 29
14. निराला : कुल्ली भाट : पृ0 : 102
15. पं0 जवाहर लाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी : पृ0 : 461